स्पर्श गद्य भाग
पाठ-3
ततांँरा-वामीरो कथा

लेखक-लीलाधर मंडलोई

लेखक परिचय

- **जन्म** – 1954 छिंदवाड़ा जिला (मध्य प्रदेश)
- **शिक्षा-दीक्षा** – भोपाल और रायपुर में
- **लीलाधर मूलत: कवि और लेखक**
- **सम्मान-** नागार्जुन सम्मान
  वागीश्वरी सम्मान
  रज़ा सम्मान(मध्य प्रदेश कला
  परिषद द्वारा)
- **मुख्य काव्य कृतियाँ-** घर-घर घूमा,रात-बिरा
  मगर एक आवाज़, देखा-अनदेखा, काला पा

पाठ एक नज़र में

तताँरा-वामीरो कथा : लीलाधर मंडलोई
भारत देश के अंडमान निकोबार द्वीप समूह के प्रेमी युगल की अमर प्रेम कथा

कथा के पात्र

तताँरा- पासा गाँव
- सच्चा प्रेमी
- साहसी
- अद्भुत शक्तियों वाला
- परोपकारी
- आकर्षक व्यक्तित्व
- प्रकृति प्रेमी
- आत्मीय स्वभाव

वामीरो- लपाती गाँव
- सुंदर एवं भोली
- सुरीला कंठ
- प्रकृति प्रेमी
- समर्पण का भाव
- सच्ची प्रेमिका

कथा का संदेश-
- प्रेम धर्म, जाति के बंधनों से परे
- सीमाएँ दिलों को नहीं बाँट सकती
- प्रेम सत्य है
- परिवर्तन शहादत माँगता है
- कुरीतियों का विरोध करें
- कुरीतियाँ प्रगति में बाधक
- व्यर्थ की परंपरा को छोड़ने में ही मानवता का कल्याण

पाठ की रूपरेखा:-

प्रस्तुत पाठ '**ततांरा-वामीरो कथा**' अंडमान निकोबार की प्रसिद्ध लोककथा है। इस द्वीप के दो टुकड़ों की कथा को ततांरा-वामीरो के प्रेम प्रसंग के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इस द्वीप पर अनेक जनजातियों का निवास था। उनके अपने रीति-रिवाज़ थे तथा रूढ़-परम्पराएँ थीं। वामीरो के गाँव की यह परंपरा थी कि दूसरे गाँव के साथ विवाह संबंध बनाने की अनुमति नहीं थी। इस परंपरा को तोड़ने के लिए ततांरा-वामीरो ने अपने प्राण त्याग दिए। प्रस्तुत पाठ में उन्हीं के आत्मबलिदान का वर्णन किया गया है।

पाठ प्रवेश

जो सभ्यता जितनी पुरानी है, उसके बारे में उतने ही ज़्यादा किस्से-कहानियाँ भी सुनने को मिलती हैं। किस्से ज़रूरी नहीं कि सचमुच उस रूप में घटित हुए हों जिस रूप में हमें सुनने या पढ़ने को मिलते हैं। इतना ज़रूर है कि इन किस्सों में कोई न कोई संदेश या सीख निहित होती है। अंदमान निकोबार द्वीपसमूह में भी तमाम तरह के किस्से मशहूर हैं। इनमें से कुछ को लीलाधर मंडलोई ने फिर से लिखा है।

प्रस्तुत पाठ तताँरा-वामीरो कथा इसी द्वीपसमूह के एक छोटे से द्वीप पर केंद्रित है। उक्त द्वीप में विद्वेष गहरी जड़ें जमा चुका था। उस विद्वेष को जड़ मूल से उखाड़ने के लिए एक युगल को आत्मबलिदान देना पड़ा था। उसी युगल के बलिदान की कथा यहाँ बयान की गई है।

प्रेम सबको जोड़ता है और घृणा दूरी बढ़ाती है, इससे भला कौन इनकार कर सकता है। इसीलिए जो समाज के लिए अपने प्रेम का, अपने जीवन तक का बलिदान करता है, समाज उसे न केवल याद रखता है बल्कि उसके बलिदान को व्यर्थ नहीं जाने देता। यही वजह है कि तत्कालीन समाज के सामने एक मिसाल कायम करने वाले इस युगल को आज भी उस द्वीप के निवासी गर्व और श्रद्धा के साथ याद करते हैं।

प्रमुख पात्र

तताँरा

- साहसी
- परोपकारी
- आकर्षक व्यक्तित्व
- अद्भुत शक्तियों से युक्त
- प्रकृति प्रेमी
- सच्चा प्रेमी

वामीरो

- प्रकृति प्रेमी
- सुरीला कंठ
- सच्ची प्रेमिका

पाठ का सार

❖ **लिटिल अंडमान-**

अंडमान द्वीपसमूह का अंतिम द्वीपसमूह लिटिल अंडमान है। इसी तरह निकोबार द्वीपसमूह के पहले द्वीप का नाम कार-निकोबार है। यह कहा जाता है कि पहले कभी ये दोनों एक हुआ करते थे।

❖ **तताँरा**- जब लिटिल अंडमान और कार-निकोबार द्वीप आपस में जुड़े हुए थे, उस समय वहाँ एक सुंदर एवं ताकतवर युवक रहता था जिसका नाम तताँरा था

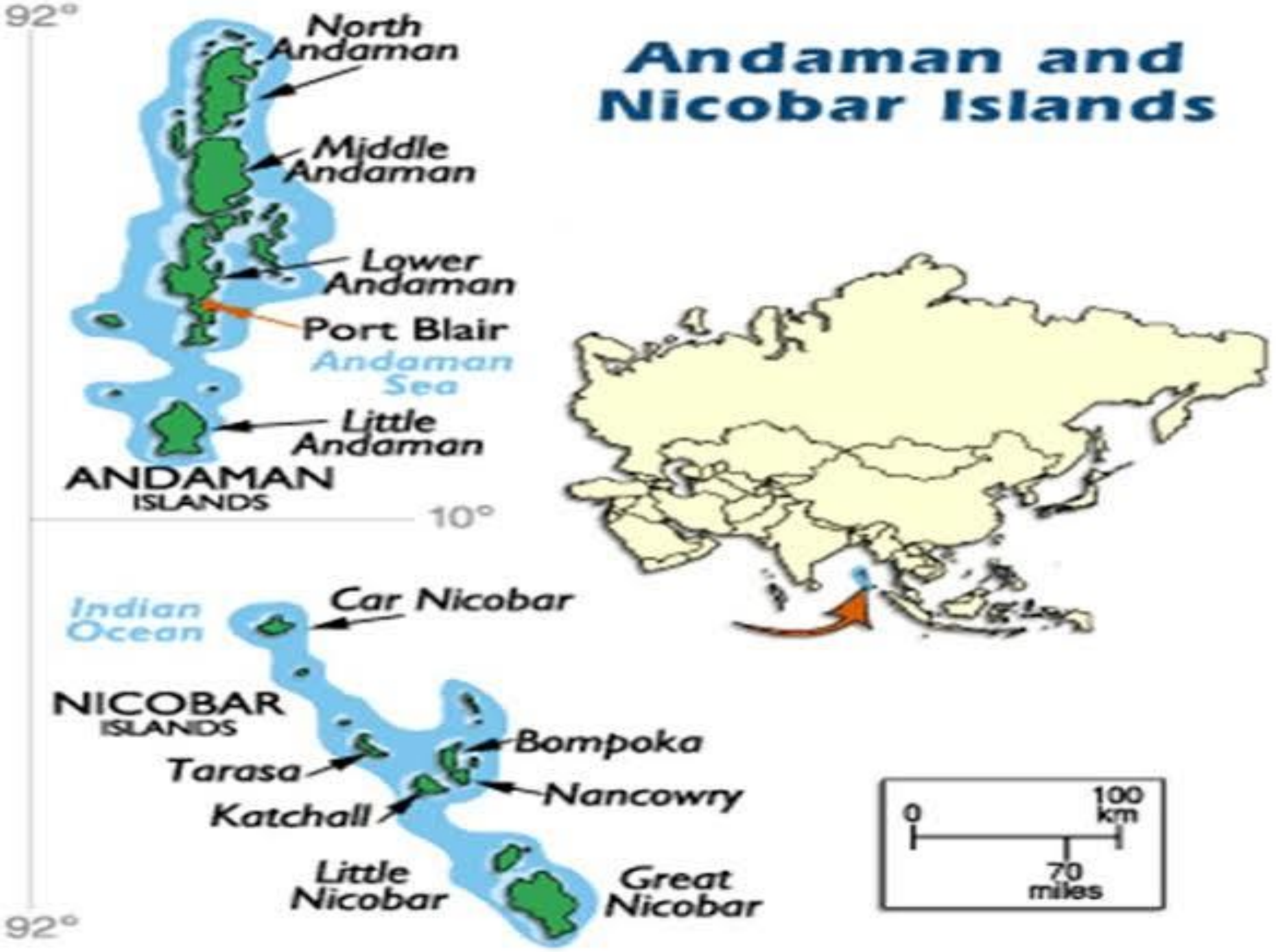
Andaman and Nicobar Islands
92°
North Andaman
Middle Andaman
Lower Andaman
Port Blair
Andaman Sea
Little Andaman
ANDAMAN ISLANDS
10°
Indian Ocean
Car Nicobar
NICOBAR ISLANDS
Bompoka
Tarasa
Nancowry
Katchall
Little Nicobar
Great Nicobar
92°
0
100 km
70 miles

तताँरा 'पासा' गाँव का रहनेवाला था। वह बहुत परोपकारी था। सभी से अपनापन रखता था। पूरे द्‌वीप की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था। यही कारण था कि द्‌वीप पर रहने वाले दूसरे गाँवों के लोग भी उसे आदर और सम्मान देते थे तथा अपने पारिवारिक और सामाजिक कामों में बुलाया करते थे। उसके पास लकड़ी की बनी हुई एक तलवार थी, जिसे वह सदैव अपनी कमर पर बाँधे रखता था। वह बहुत साहसी था। उसके साहस के कारनामे दूर-दूर तक फैले हुए थे इसलिए लोग यह मानते थे कि उसकी तलवार में अद्भुत शक्ति थी।

❖ **तताँरा वामीरो की मुलाकात-**

एक दिन शाम को तताँरा समुद्री बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को निहार रहा था, तभी उसे एक मधुर गीत सुनाई दिया। उसे वह गीत इतना मधुर लगा कि वह गीत में खो गया। तेज़ लहरों ने उसे सजग किया। सजग होते ही वह अपने को रोक नहीं पाया और गीत के स्वर की ओर बढ़ने लगा। उसकी नजर एक लड़की पर पड़ी, जो एक प्रेम का गीत गा रही थी। उसी समय एक समुद्री लहर ने उसे भिगो दिया और उसने गीत गाना बंद कर दिया। वह लड़की वामीरो थी, जो लपाती गाँव की रहने वाली थी।

❖ **ततँारा का गीत जारी रखने का अनुरोध-**

गीत रुकते ही ततँारा परेशान हो गया। उसने वामीरो से पूछा कि उसने गीत गाना क्यों बंद कर दिया? वामीरो ने उसे बेरुखी से जवाब दिया। ततँारा उससे बार-बार गीत गाने का अनुरोध करता रहा। अंत में वामीरो ने उससे कहा कि वह इस गाँव का नियम नहीं जानता, जो बार-बार उसे गीत गाने को कहे जा रहा है। यह कहकर वह जाने लगी तब ततँारा उससे माफ़ी माँगता है और उससे व उसका नाम पूछता है। वह अपना नाम वामीरो बताती है। उसे उसका नाम अच्छा लगता है। ततँारा उससे अगले दिन फिर समुद्र तट पर आने का निवेदन करता है। वह उसे भी अपना नाम बताता है और कहता है कि कल वह उसके आने का इंतज़ार करेगा।

- **वामीरो की बेचैनी-**

वामीरो भी तताँरा से बहुत प्रभावित हुई। उसने अपने सपनों में जैसे जीवनसाथी की कल्पना की थी,वैसी ही झलक उसे तताँरा में दिखाई दी किंतु परेशानी यह थी कि वह उसके गाँव का नहीं था और उसके गाँव का यह नियम था कि किसी दूसरे गाँव के लड़के से उसका विवाह नहीं हो सकता था। इस कारण वह उदास हो गई और तताँरा को भूलने की कोशिश करने लगी।

- **तताँरा-वामीरो का पुनः मिलना-**

दोनों एक-दूसरे से मिलने को बेचैन थे। वे अपने आपको रोक नहीं पाए। शाम होते ही वह दोनों तट पर मिलते थे। घंटों ही एक-दूसरे को देखते रहते। इस तरह दिन बीतते गए।

समुंद्र का किनारा

❖ **ततॉँरा वामीरो का भेद खुलना-**

वह दोनों तट पर सबसे छिपते-छिपाते मिलते थे। एक दिन लपाती के कुछ लड़कों ने दोनों को एक साथ देख लिया और यह बात सारे गाँव में फैल गई। दोनों को गाँव वालों ने समझाया कि उनका विवाह संभव नहीं है परंतु वे फिर भी एक दूसरे से मिलते रहे।

❖ पासा का पशु पर्व-

कुछ समय बाद पासा गाँव में पशु पर्व का आयोजन किया गया। इस पर्व में पशुओं का प्रदर्शन व पशुओं और आदमियों के बीच शक्ति प्रर्दशन होता था अर्थात उनके बीच प्रतियोगिता करवाई जाती थी कि कौन ज्यादा ताकतवर है। इसके बाद गीत,संगीत,नृत्य,उत्सव आदि का आयोजन होता था लेकिन तताँरा का मन इस पर्व में नहीं था वह तो वामीरो को ढूँढ रहा था।

अचानक उसकी नज़र वामीरो पर पड़ी वह बहुत ज़ोर से रो रही थी। उसके रोने की आवाज़ सुनकर वामीरो की माँ भी वहाँ आ गई। तताँरा को अपनी बेटी के साथ देखकर वह बहुत गुस्सा हो गई और तताँरा का अपमान करने लगी। तताँरा से यह सब सहन नहीं हुआ। उसने गुस्से में आकर अपनी तलवार निकाली और पूरी ताकत के साथ उसे धरती में गाड़ दिया। वह तलवार को खींचते हुए दूर तक चला गया और द्वीप के अंतिम छोर(सिरे) तक पहुँच गया।

❖ **धरती में दरार-**

जहाँ तक धरती में तताँरा की तलवार गड़ी हुई थी। वहीं से धरती के दो भाग हो गए थे। अब एक ओर तताँरा खड़ा था और दूसरी ओर वामीरो खड़ी थी। यह दृश्य देखकर वामीरो चिल्ला पड़ी। अब धरती में गहरी दरारें पड़ चुकी थी, जिस भाग पर तताँरा खड़ा था वह भाग अब धरती में धँसने लगा था। तताँरा ने छलाँग लगाकर दूसरे सिरे को पकड़ने की कोशिश की किंतु उसकी कोशिश सफल नहीं हुई और वह समुद्र की ओर फिसलने लगा।

❖ **ततँारा और वामीरो की दुखद मृत्यु-**

उस समय उसके मुँह से केवल एक ही शब्द निकाल रहा था- वामीरो। वामीरो भी उसका नाम पुकार रही थी। ततँारा बहुत बुरी तरह से ज़ख़्मी होकर बेहोश हो गया था। वह कटे हुए द्‍वीप के आखिरी भूखंड (ज़मीन का टुकड़ा) पर पड़ा हुआ था जो दूसरे हिस्से से किसी तरह अब भी जुड़ा हुआ था। उसके बाद ततँारा बहता हुआ कहाँ पहुँचा? उसका क्या हाल हुआ? कोई नहीं जानता। दूसरी ओर वामीरो भी पागल हो चुकी थी। उसने खाना-पीना छोड़ दिया था, वह अपने परिवार से भी अलग हो गई थी। लोगों ने उसे बहुत ढूँढा पर उसका कहीं पता नहीं चला।

❖ **ततााँरा-वामीरो की कथा का प्रभाव-**

आज ततााँरा-वामीरो दोनों नहीं हैं, लेकिन उनकी यह प्रेमकथा घर-घर में सुनाई जाती है। उनके इस बलिदान के बाद निकोबारी दूसरे गााँवों में भी वैवाहिक संबंध करने लगे अर्थात उनकी बरसों पुरानी कुप्रथा का अंत हो गया और दूसरे गााँवों में शादियााँ होने लग गईं।

पाठ का संदेश-

ततााँरा वामीरो कथा हमें यह संदेश देती है कि सीमाएँ मनुष्य के दिलों को नहीं बाँट सकती। प्रेम किसी बंधन और रूढ़ि(कुप्रथा) को नहीं मानता। प्रेम सत्य है, परिवर्तन शहादत माँगता है। हमें जीवन में कुरीतियों को स्थान नहीं देना चाहिए। ये हमें जीवन में आगे बढ़ने से रोकती हैं। समय के साथ नहीं चलने देती इसलिए ऐसे गलत रीति-रिवाज़ों को छोड़ देने में ही मानवता की भलाई है।

धन्यवाद

sns academy

a fingerprint school